

## श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम् रावणरचितम्

{ श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम् रावणरचितम् }

॥ अथ रावणकृतशिवताण्डवस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शटाटवीगलङ्गलप्रवाहपावितस्थले

गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गुज्ज्वालिकाम् ॥

ऽमकुम्कुमकुम्भिनाद्वकुमर्वयं

यकार यण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १ ॥

शटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्ऋरी-

-विलोलवीथिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ॥

धगद्धगद्धगञ्जवल्ललाटपट्टपावके

किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्ಷाणं मम ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनंदिनीविलासबन्धुबन्धुर

स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ॥

कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि

ऽवयिद्दिगम्भरे(ऽवयिच्छिदम्भरे) मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

शटभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्क्षणामण्डिप्रभा

ऽदम्भकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्धूमुभे ॥

मद्वन्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे

मनो विनोदमद्भुतं विभर्तुं भूतभर्तुरि ॥ ४ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेभशेभर  
प्रसूनधूलिघोरणी विधूसराडिघपीठभूः ॥  
भुवङ्गराजमालया निभद्धजटवूटक  
श्रियै चिराय जयतां यकोरभन्धुशेभरः ॥ ५ ॥

ललाटयत्परभवलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-  
-निपीतपञ्चसायकं नमस्त्रिलिम्पनायकम् ॥  
सुधामयूभलेभया विराजमानशेभरं  
महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगभवल-  
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रयासपञ्चसायके ॥  
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुर्यात्रयित्रपत्रक-  
-प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ७ ॥  
नवीनमेघमण्डली निरुद्धर्धुरस्फुरत्-  
कुङ्कुनिशीथिनीतमः प्रभन्धुभद्धकन्धरः ॥  
निलिम्पनिर्ऋरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः  
कलानिधानभन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-  
-वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रभद्धकन्धरम् ॥  
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मभच्छिदं  
गवच्छिदं धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भवे ॥ ९ ॥

अभर्व(अगर्व)सर्वमङ्गलाकलाकदम्भमञ्जरी

रसप्रवाहमाधुरी विवृम्भाणामधुप्रतम् ॥  
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मभान्तकं  
गणान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भवे ॥ १० ॥

व्यत्यदभ्रविभ्रमभ्रमद्भ्रुवङ्गमधस-  
-द्विनिर्गमत्कमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ॥  
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृङ्गतुङ्गमङ्गल  
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रयत्सतात्सवः शिवः ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुवङ्गमौक्तिकस्रगोर्-  
-गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ॥  
तृणारविन्दयक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः  
समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भवे ॥ १२ ॥

कदा निलिम्पनिर्जरीनिकुञ्जकोटरे वसन्  
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन् ॥  
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्रकः  
शिवेति मंत्रमुच्यरन् कदा सुधी भवाम्यहम् ॥ १३ ॥

निलिम्प नाथनागरी कदम्भ मौलमल्लिका-  
निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूषिकाभनोहरः ॥  
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीं महनिशं  
परिश्रय परं पदं तदङ्गवत्विषां ययः ॥ १४ ॥

प्रयत्स वाऽवानल प्रभाशुभप्रचारणी

महासिद्धिकामिनी जनावहूत जल्पना ॥  
विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः  
शिवेति मन्त्रभूषणो जगज्जयाय जयताम् ॥ १५ ॥

धर्मं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं  
पठन्मरन्ध्रुवज्जरो विशुद्धिमेतिसंततम् ॥  
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं  
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ॥ १६ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं  
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ॥  
तस्य स्थिरं रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तं  
लक्ष्मीं सदैव सुमुञ्चिं प्रददाति शम्भुः ॥ १७ ॥

॥ धृति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

The stotra is in panchachAmara Chanda, in which there are 16

varna-s per line, each line begins with a laghu and the laghu and guru varna-s alternate. So there are eight LG (laghu-guru) pairs, making up 16 syllables of each line. The last shloka is in Vasanta-tilakA metre.

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

Last updated त्oday

<http://sanskritdocuments.org>

Shiva Tandava Stotram Lyrics in Gujarati PDF

% File name : shivtAND.itx

% Location : doc\\_shiva

% Author : Ravana

% Language : Sanskrit

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Transliterated by : Girish Beeharry and Sushil D. Sharma sushil at synopsis.com

% Proofread by : Girish Beeharry and Sushil D. Sharma

% Description-comments : Extended version with 17 verses

% Latest update : June 14, 2013

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access : <http://sanskritdocuments.org>

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%

We acknowledge well-meaning volunteers for [Sanskritdocuments.org](http://Sanskritdocuments.org) and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [ October 12, 2015 ] at [Stotram](http://Stotram) Website